दिनांक
5-8-20

धर्मशास्त्र विभाग
उपशास्त्री प्र वर्ष
मनुस्मृति:
सृष्टि

(1) श्लोक: →

"ताभ्यां स शकलाभ्यां च दिवं भूमिं च निर्ममे।
मध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम्॥

व्याख्या →

इस श्लोक तथा पूर्व श्लोकों में महर्षि ने सृष्टिक्रम या उसकी उत्पत्ति के बारे में बताया है और इस पद्य के द्वारा आगे यह बता रहे हैं कि जिस अण्ड के दो टुकड़े ब्रह्मा जी ने किये थे उस ऊपर के भाग से स्वर्गलोक नीचे से भूलोक और दोनों के बीच आकाश बनाकर आठों दिशा और जल का स्थिर स्थान- समुद्र को बनाया॥

(2) श्लोक: →

"उद्बबर्हात्मनश्चैव मनः सदसदात्मकम्।
मनसश्चाप्यहंकारमभिमन्तारमीश्वरम्॥

व्याख्या →

अब इस श्लोक के द्वारा महर्षि सृष्टिक्रम या उसकि उत्पत्ति के बारे में बताने जा रहे हैं सर्वप्रथम सृष्टिक्रम में

उस परमपिता परमेश्वर अर्थात् जगत् के रचयिता उस ब्रह्मा ने उस प्रकृति तत्व से मन की उत्पत्ति की तत्पश्चात् मन से अहङ्कार की उत्पत्ति की तथा उसके बाद अहङ्कार से महत्तत्व की रचना की ।।

।। इति ।।

Amit Kr Shukla
वेद विभाग
5-8-20

Scanned with CamScanner